International Journal of Applied Research 2015; 1(10): 999-1001

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(10): 999-1001
www.allresearchjournal.com
Received: 27-07-2015
Accepted: 30-08-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा

अमीर खुसरो की कविता में संवेदना और शिल्प

डॉ. शिवदत्त शर्मा

अमीर खुसरो का जन्म 1253 ई में आधुनिक उत्तरप्रदेश के एटा जिले के पटियाली नामक गांव में हुआ था। पिता अमीर सैफुद्दीन मुहम्मद तुर्कों के लाचीन कबीले के सरदार थे और मुगलों के अत्याचार से तंग आ कर इस गांव में रहने लगे थे। मात्र आठ वर्ष की उमर में अपने पिता का साया जाता रहा तथा इनके नाना एमादुल मुल्क ने इनका लालन पालन किया। नाना का घर भारतीय सभ्यता व संस्कृति का केन्द्र था जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव बालक अमीर खुसरो पर पडा। उन्होंने संस्कृत,फारसी,अरबी,तुर्की,तथा भारत की अनेक प्रांतीय भाषाओं को शीघ्र ही सीख लिया। उन्होंने तुहफतुस्सग्र में इसका बखूबी जिक्र किया हैं।

अमीर खुसरो ने विभिन्न सुलतानों के दरबारों में खूब मान सम्मान प्राप्त किया। अनेक सुलतानों के आश्रय में अमीर खुसरो ने अपना जीवन बिताया। [1] प्रसिद्ध सूफी सन्त हजरत निजामुद्दीन औलिया अमीर खुसरो के गुरु थे। गुरु के देहान्त पर उन्होंने एक दोहा कहा था जो बहुत प्रसिद्ध हुआ– गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस।चल खुसरो घर आपने रैनभई चहुं देस।। गुरु के देहान्त के छः महीने बाद ही सन् 1325 ई को अमीर खुसरो भी इस दुनिया से चले गए।

अमीर खसरो हिन्दी और फारसी के अद्भुत शायर होते हुए भी उनको अपनी मातृभूमि से अत्यधिक प्रेम था।उनकी अनेक रचनाएं इसकी गवाह हैं। यद्यपि अमीर खुसरो की हिन्दी की प्रमाणिक रचना प्राप्त नहीं है फिर भी इसका यह अर्थ नहीं कि उन्होंने हिन्दी में कोई रचना नहीं की। वास्तव में हिन्दीभाषा के अन्तर्गत खडी बोली,राजस्थानी,ब्रज,अवधी आदि उपभाषाओं का समावेश हो जाता है। आज केवल खडी बोली के मानक रूप को हिन्दी तथा भारत की राजभाषा कहा जाता है।इसी खडी बोली के विकास में खुसरो का योगदान अविस्मरणीय है। [2] अमीर खुसरो को ही सबसे पहले इस खडी बोली का नामकरण हिन्दी के रूप में करने का श्रेय प्राप्त हुआ। उन्होंने अपने ग्रन्थ खालिकबारी में हिन्दी शब्द का पांच बार तथा हिन्दवी शब्द का तीस बार प्रयोग कर खडी बोली का एक तरह से नामकरण ही कर दिया–

यूश चुहा गुर्वः बिल्ली मार नाग।
सेजनो रिश्ता व हिन्दी सूई ताग।।

अमीरखुसरो ने निस्सन्देह हिन्दी में रचनाएं कीं होंगी इसमें सन्देह नहीं। प्रसिद्ध भाषाविज्ञानी डॉ भोलानाथ तिवारी ने अमीर खुसरो की हिन्दी कविता को मुख्यतः बारह भागों में विभाजित किया है। 1 पहेलियां 2मुकरियां 3 निस्बतें 4 दो सखून 5 ढकोसला 6 गीत 7 कब्बाली 8 फारसी–हिन्दी मिश्रित छन्द 9सूफीदोहे 10 गजल 11 फुटकलछन्द 12 खालिकबारी

1 पहेलियां– अमीर खुसरो अपनी पहेलियों के लिए प्रसिद्ध थे। उनकी पहेलियों को दो बर्गों में बांटा जा सकता है।

क अन्तर्लिपिका– इसमें कवि पहेली पूछने के साथसाथ उसका उत्तर भी दे देता है–
एक नार वो दांत दतीली,पतली दुबली छैल छबीली।
जब वो तिरिया को लागै भूख, सूखे हरे चबाबे रूख।
जे कोई बताबै वाकि बलिहारी,खुसरो कटे की बारे की आरी।– आरी

ख बहिर्लिपिका– इसमें कवि केवल प्रश्न करता है उत्तर नहीं देता, यथा–
एक गुणी ने यह गुन कीना।
हरियल पिंजरे में दे दीना।
देखा जादूगर का हाल।
डाले हरा निकाले लाल। – पान

2 मुकरियां – मुकरी शब्द मुकरने अर्थात् मना करने से बना है। सखी सहेलियों, दुल्हनों में हास–परिहास के लिए इनका प्रयोग हुआ है। एक सखी संकेत से पूछती है तथा अन्य सखियों द्वारा दिए उत्तर को नकार कर कोई दूसरा उत्तर देती है। यथा–

सगरी रैन मोहे संग जागा,
भोर भई तो बिछरन भागा।
उसके बिछडे फाटत हिया,
ए सखि सज्जन, ना सखी दीया।

3 निस्बतें– जब कवि ने दो चीजों की आपस में तुलना की है तब उन्होंने निस्बतें का प्रयोग किया है।

4 दो सखुन– इसमें कवि दो भिन्न वस्तुओं से सम्बन्धित प्रश्न पूछता है जिनका उत्तर एक ही होता है। दो सखुन दो प्रकार से रचित हैं एक केवल हिन्दी में प्रश्न उत्तर वाला है दूसरे में एक प्रश्न हिन्दी में तथा दूसरा फारसी में पूछा गया है–

क पान सडा क्यों ? घोडा अडा क्यों ? – फेरा न था
जूता क्यों न पहना ? समोसा क्यों न खाया ? – तला न था

5 ढकोसला– इसे तुकबन्दी भी कहते हैं। इसमें भिन्न शब्दों को जोड कर सार्थक रूप देने का प्रयास किया जाता है।

य था– खीर पकाई जतन से, चरखा दिया चला।
कुत्ता आया खा गया, तू बैठी ढोल बजा।
ला, पानी पिला।

6 गीत– अमीर खुसरो ने भारतीय संस्कृति, जीवन दर्शन परम्पराओं आदि को आधार बना कर अनेक गीत लिखे हैं।ये गीत जन साधारण से जुडे प्रतीत होते हैं। [3] यथा–

अम्मा मेरे बाबा को भेजो जी– कि सावन आया।
बेटी तेरा बाबा तो बुढा री –कि सावन आया।

7 कब्बाली– कब्बाली के जन्म दाता के रूप मे अमीर खुसरो को जाना जाता है। धर्म, रीति, मनोरंजन,और इबादतं में कब्बाली का प्रयोग अधिक किया गया है।उनकी एक कब्बाली की एक बानगी देखिए–

रे सखंता मवा– योरी ला–सब बन।
खेलत धमाल ख्वाजा मुइनुद्दीन और ख्वाजा कुतुबुद्दीन।

8 फारसी मिश्रित छन्द– अमार खुसरो ने दो सखुन की तरज पर ही हिन्दी फारसी मिश्रित छन्द भी लिखे हैं।

9 फारसी दोहे– अमीर खुसरो ने हिन्दुस्तान की सुन्दरता, संस्कृति आदि को फारस के देशों तक पहुंचाने के लिए फारसी दोहों की भी रचना की।

तुर्क–इ–हिन्दुस्तानिन मन,दर हिंदवी गोयम जबान।
शक्कर ई मिस्त्री न दो रमकज, अरम गोयम सुखवा।

अर्थात् मैं हिन्दुस्तानी तुर्क हूं। मैं हिन्दवी में जबाब देता हूं। मेरे पास कोई मिश्री–शक्कर नहीं, जिससे मैं अरबों से बात कर सकूं।

10 गजल–अमीर खुसरो ने हिन्दी और फारसी मिश्रित गजलों की भी रचना की। इसतरह उन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय अपनी बहुमुल्य रचनाओं में दिया है। उनकी गजल की एक बानगी देखिए–

जेहाली मिस्कीं मकुण तगा फुल, दुराय नैना बनाम बतियां।
किताबे हिजरा न दारय ऐ जां, न लेहुकाहे लगाय छतियां।
शबाने हिजरां दराज चूं जुल्फें, रोजे वस्त्रत चउम्र कोताह।
सखि, पिया को जो मैं न देखूं, तो कैसे काटूं अंधेरी रतियां।

11 फुटकल छन्द– अमीर खुसरो ने अनेक फुटकल छन्दों की भी रचना की जो जनसाधारण से जुडीं थीं।

12 खालिक बारी– सबसे प्रसि़द्ध इस रचना में कवि ने हिन्दी फारसी के शब्दों को इस प्रकार से प्रयुक्त किया हैं ताकि जनसाधारण हिन्दी के साथ साथ फारसी को भी समझ सके।इस तरह दोनों ही भाषा भाषियों को दोनों भाषाओं को सीखने के साथ साथ परस्पर साहित्य का भी आनन्द प्राप्त हो सके। खालिक बारी में 2000 छन्द हैं। इस रचना का एक उदाहरण देखिए–

रसूल पैगम्बर जान बसीठ। यार दोस्त बोलै जो इठ।
मर्द मानस जनह इस्तरी। कहत अकाल बबा है मरी।
दिया बिरादर आवरे भाई । बिनशी मादर बैठ री माई।
तुरा बुगु फतम, मैं तुझ कहैया । कुजा बिमादी तू कित रहय।

अमीर खुसरो वास्तव में सौंदर्य और संवेदना के कवि हैं संस्कृति के योजक एवं हिन्दी तथा फारसी के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। उनकी कविता के पांच प्रमुख प्रतिपाद्य माने जा सकते है।[4]

1 सौंदर्य और प्रेम के कवि– अमीर खुसरो की कविता सौंदर्य एवं प्रेंम की कविता है। उन्होंने भारत के अध्यात्म से प्रेम व सौं दर्य का विकास किया तथा अपने समय की श्रेष्ठ तम कविता से जन साधारण को रुबरु कराया। उन्होंने लोकजीवन में प्रचलित अनेक रीतियों, प्रकृति आदि का वर्णन किया है। भारतीय समाज में विवाह के बाद बेटी की विदाई का दृश्य अत्यंन्त हृदय स्पर्शी होता है।इसी परम्परा को आधार बना कर कवि का अन्दाजे बयान देखिए–

काहे को बियाहे बिदेस, सुन बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तोरे बाग की कलियां ।
घर–घर मांगी जाय रे, सुन बाबुल मोरे।

2 सांस्कृतिक सद्भावना–अमीर खुसरो मुस्लिम होते हुए भी संकीर्ण विचारधारा वाले व्यक्ति नहीं थे। उनका हृदय अत्यन्त उदार तथा उनका दृष्टिकोण अत्यंन्त व्यापक था। उन्होंने भारत को एक विजित प्रदेश की भांति स्वीकार नहीं किया बल्कि उसे अपनी मातृभूमि के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने बिना किसी भेदभाव से भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों व्यवसायों आदि को अपनी कलम का आधार बनाया। कुम्हार, चौपड, पतंग,हांडी, चाक जैसे अनेक विषय उनकी कविता का मुख्य आकर्षण बने। उदाहरण देखिए–

कीली पर खेती करै, औ पेड में देदे आग।
रास ढोवै घर में रखै, वहां रह जाए राख। – कुम्हार

3 हास्य और व्यंग्य – अमीर खुसरो की पहेलियां और मुकरियां हास परिहास का मुख्य स्त्रोत हैं। सखियों में आपसी हंसी मजाक के लिए वे विशेषकर मुकरियों को माध्यम बनाते हैं। एक उदाहरण देखिए–

सरब सलोना सब गुन नेका, वा बिन सब जग सागे फीका।
वका सरपर होवे गोन, ए सखि साजन, ना सखी नोन ।

4 हिन्दीऔर फारसी का सुमेल– अमीर खुसरो ने दो सुखने, कब्बाली, गजलतथा खालिक बारी के माध्यम से हिन्दी फारसी को

एक धरातल पर ला कर खडा कर दिया उससे न केवल सांस्कृतिक एकता को बढावा मिला अपितु दो अलग समुदायों को एक करने का भी उपक्रम अमीर खुसरो की कविता ने किया जो सामाजिक सौहार्द्र के लिए अत्यंन्त आवश्यक था।उन्होंने फारसी ग्रन्थों में तो अपने हिन्दी प्रेम को प्रकट कर दिया है, इसके इलावा उन्होंने फारसी जानने वालों को हिन्दी सिखाने का ओर हिन्दी जानने वालों को फारसी सिखाने के लिए भी हिन्दी फारसी मिश्रित कविता की रचना की। [5] यथा–

तिश्ना रा चे मी बायद – मिलाप को क्या चाहिए– चाह
शिकारब चे भी बायद –कूवते मगज को क्या चाहिए–बादाम

5 रस योजना – अमीर खुसरो के काव्य में श्रृंगार–रस, वीभत्स–रस, अद्भुत–रस, शान्त–रस, करुण–रस आदि का निरूपण हुआ है। कुछ उदाहरण देखिए–

क– वीभत्स–रस– लाल रंग वह चिपटा चिपटा, मुंह को करके काला ।
थूक लगा कर दाब दिया, जब खसम का नाम निकाला।

ख – श्रृंगार–रस – खुसरो रैन सुहाग की, जागी पी के संगं
तन मेरो मन पीउ को, दोउ भए एक रंगं।

6 शिल्प विधान– अमीर खुसरो की हिन्दी कविता में देशज और विदेशज शब्दों का सपान रूप से प्रयोग हुआ है। उनकी हिन्दी कविता जन साधारण की भाषा है शायद उसके प्रसिद्ध होने का यही सबसे बडा कारण है। एक उदाहरण देखिए–

सिर पर जटा गले में झोली,किसी गुरु का चेला है।
भर भर झोली घर को धावे, उसका नाम पहेला है।

अमीर खुसरो की हिन्दी कविता में काव्य संवेदना, कला कौशल और पाण्डित्य कूट कूट कर भरा है। उनके काव्य में भावोत्कर्ष के लिए अलंकारों का प्रयोग भी मिलता है। अनुप्रास, श्लेष,यमक, रूपक, अतिश्योक्ति, विभावना, विरोधाभास, दीपक, मानवीकरण आदि सभी प्रकार के अलंकारों का प्रयोग हुआ है। विभावना अलंकार का एक प्रयोग देखिए– [6]

गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डाले केस।
चल खुसरो घर आपने,रैन भई चहुं देस।

अमीर खुसरो ने हिन्दी कविता में प्रहेलिका, ढकोसला, सुखना आदि कई नवीन शैलियों का प्रयोग किया है। अमीर खुसरो की कविता में संवेदना और शिल्प देखते ही बनता है। यहां तक कि उनकी कविता ने पर वर्ती कवियों और कविता को भी प्रभावित किया। उनका प्रभाव प्रायः सभी परवर्ती कवियों में देखा जा सकता है। अमीर खुसरो मूलतः फारसी के कवि थे न कि हिन्दी के, फिर भी हिन्दी के माध्यम से उनकी उत्कृष्ट काव्य प्रतिभा को स्पष्टतः आंका जा सकता है। उनकी मुख्य भाषा फारसी ही थी। संक्षेपतः कहा जा सकता है कि उनका हिन्दी साहित्य और विशेषकर हिन्दी भाषा को दिया गया योगदान सदैव अविस्मरणीय है।[7]

सन्दर्भ सूचि

1. शर्मा सुनील अमीर खुसरो पोइट स ऑफ सुलतान एण्ड सूफीज
2. डिवि जी एन इण्डियनलिटरेरी किटिसिज्म थ्योरी एण्ड इन्टरपरिटेशन
3. लाल इन्द्रजीत अमीर खुसरो
4. मुहम्मद हबीब हजरत अमीर खुसरो
5. ब्रोने इ जी लिटरेरी हिस्टरी ऑफ परसिया
6. चोपडा र म ग्रेट पोइटस ऑफ कलासिकल परसियन